अभ्यास पत्रक

पाठ – अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

नाम :- ………… कक्षा :- ………… अवधि :- .... अनुक्रमांक :- .... प्राप्तांक :- ....

1. अपठित गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"माँ कहती थीं – सूरज ढलने के बाद पत्ते मत तोड़ो, वरना पेड़ रोते हैं।
माँ के साथ रहते हुए यह यक़ीन बन गया था कि पेड़, पत्ते, फूल और जानवर सिर्फ़ चीज़ें नहीं हैं, उनमें भी भावनाएँ होती हैं।
जब कोई फूल तोड़ता था तो माँ उदास हो जाती थीं – 'पैदा होने से पहले ही मार डाला।'

1. लेखक की माँ के अनुसार सूरज ढलने के बाद क्या नहीं करना चाहिए और क्यों?

उत्तर - ....
....

2. माँ की बातों ने लेखक के मन में कौन-सा विश्वास उत्पन्न किया?

उत्तर - ....
....

3. माँ फूल तोड़ने पर क्यों उदास हो जाती थीं?

उत्तर - ....
....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** लेखक की माँ अत्यंत संवेदनशील और प्रकृति-प्रेमी थीं।
   कारण: वे फूलों, पेड़ों और पक्षियों के व्यवहार को समझती थीं और उन्हें जीवित प्राणी मानती थीं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** लेखक ने कबूतरों को दाना डालने के लिए नई खिड़की बनवाई।
   कारण: लेखक पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम करता था।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: गलत

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. लेखक की माँ कब पत्ते तोड़ने से मना करती थीं?
   (क) भोर में (ख) दोपहर में (ग) बारिश में (घ) सूरज ढलने के बाद
7. "पेड़ रोते हैं" – इस अभिव्यक्ति का आशय क्या है?
   (क) वैज्ञानिक दृष्टिकोण (ख) भावनात्मक दृष्टिकोण
   (ग) हास्यपूर्ण दृष्टिकोण (घ) धार्मिक दृष्टिकोण
8. लेखक ने कबूतरों से किसे 'कबीर' और 'ग़ालिब' कहा?
   (क) किताबों को (ख) बच्चों को (ग) अपनी रचनाओं को (घ) पक्षियों को
9. 'मिट्टी से मिट्टी मिले' – यह पंक्ति किस बात की ओर संकेत करती है?
   (क) जीवन का मूल्य (ख) पृथ्वी की शक्ति (ग) मृत्यु और समानता (घ) गंदगी से परेशानी

egyanarchive

10. लेखक का घर कहाँ स्थित है?

(क) समंदर के किनारे (ख) रेल लाइन के पास (ग) खेतों के पास (घ) पहाड़ के ऊपर

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखक की माँ के प्रकृति के प्रति व्यवहार को कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. पाठ के अनुसार, लेखक ने कबूतरों को घर से क्यों हटवा दिया?

उत्तर - .....

.....

.....

13. लेखक 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' शीर्षक से क्या कहना चाहता है?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. लेखक की माँ और वर्तमान समय के मनुष्यों के व्यवहार की तुलना करते हुए स्पष्ट कीजिए कि भावनात्मक संवेदनशीलता में क्या अंतर आ गया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "दूसरों के दुःख से दुःखी होना ही मनुष्यता की पहचान है" – इस कथन की पुष्टि पाठ के संदर्भ में कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

eGyanarchive

उत्तर कुंजी

1. माँ कहती थीं कि सूरज ढलने के बाद पत्ते तोड़ने से पेड़ रोते हैं। उनका मानना था कि पेड़ भी संवेदनशील होते हैं और उन्हें भी समय और सम्मान मिलना चाहिए।

2. लेखक को यह विश्वास हो गया था कि पेड़-पौधों और जानवरों में भी भावनाएँ होती हैं।

3. क्योंकि वे मानती थीं कि फूलों को तोड़ना उनके जीवन को नष्ट करना है – वह जन्म लेने से पहले ही मार दिए जाते हैं।

4. (क)

5. (घ)

6. (घ)

7. (ख)

8. (क)

9. (ग)

10. (क)

11. माँ न केवल पेड़-पौधों, बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी अत्यंत संवेदनशील थीं। वे मानती थीं कि पेड़, पत्ते, फूल सभी में भावनाएँ होती हैं। उनका व्यवहार दिखाता है कि वे प्रकृति को जीवित मानती थीं और उसके साथ मानवीय व्यवहार करती थीं।

12. लेखक ने कबूतरों को इसलिए हटवा दिया क्योंकि वे घर की खिड़कियों से अंदर आकर गंदगी फैलाते थे, किताबों पर बैठते थे और शांति भंग करते थे। लेकिन इस निर्णय से लेखक को मन में अपराधबोध भी हुआ क्योंकि उसकी माँ उन्हें हज़रत मोहम्मद का अज़ीज़ मानती थीं।

13. लेखक इस शीर्षक से यह कहना चाहता है कि आज के समय में लोगों में दूसरे के दुख को समझने और महसूस करने की भावना कम होती जा रही है। अब हर कोई अपने आराम, सुविधा और स्वार्थ में डूबा है, जबकि पहले लोग दूसरों के दुःख से व्यथित होते थे।

14. लेखक की माँ अत्यंत भावनाशील और करुणामयी थीं। वे पेड़ों, फूलों, पक्षियों, जानवरों सभी को अपनी तरह महसूस करती थीं। वे मानती थीं कि सभी जीवों के प्रति संवेदना रखना ही सच्ची मानवता है। दूसरी ओर, आज का मनुष्य केवल अपने स्वार्थ में उलझा हुआ है। वह न पर्यावरण की चिंता करता है और न ही अन्य प्राणियों की। लेखक ने कबूतरों को खिड़की से भगाकर यह महसूस किया कि अब माँ जैसी करुणा और संवेदना हमारे भीतर नहीं रही। यह अंतर दर्शाता है कि भावनात्मक रूप से हम पिछड़ते जा रहे हैं।

15. मनुष्यता का अर्थ केवल मानव-शरीर में जन्म लेना नहीं है, बल्कि दूसरों के दुःख को महसूस करना, उनके प्रति सहानुभूति रखना और बिना स्वार्थ के मदद करना ही सच्ची मानवता है। लेखक के अनुसार पहले समय में लोग केवल अपने नहीं, दूसरों के दुःख में भी भागीदार होते थे। लेखक की माँ न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि पेड़-पौधों, फूलों और पक्षियों के लिए भी दुखी होती थीं। वे कहती थीं – "सूरज ढलने के बाद पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोते हैं।" परंतु अब ऐसा नहीं है। लेखक कबूतरों को सिर्फ इस कारण खिड़की से हटवा देता है क्योंकि वे गंदगी फैलाते हैं। यह घटना बताती है कि अब हम केवल अपनी सुविधा और सुख में जीते हैं, दूसरों की पीड़ा से हमारा कोई सरोकार नहीं। यह पाठ हमें चेतावनी देता है कि अगर हम दूसरों के दुःख से भी दुःखी होना नहीं सीखेंगे, तो हमारी मनुष्यता खो जाएगी।